UNIVERSITY NEWS 12 OCTOBER 2025

AMAR UJALA PAGE NO 7

नवीन विधिक प्रवृत्तियों से होंगे परिचित

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय में शनिवार को नव अधिनियमित आपराधिक विधियों का विश्लेषण एवं समीक्षा विषय पर होने वाले कार्यक्रम का पोस्टर विमोचन हुआ। विधि संकायाध्यक्ष प्रो. आरके वर्मा ने कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक आयोजन अध्यापकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों में नवीन विधिक प्रवृत्तियों पर विमर्श व अनुसंधान की अवधारणा को सशक्त करते हैं। (संवाद)

भारतीय सभ्यता के इतिहास से हुईं रूबरू

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध खुन खुन जी गर्ल्स पीजी कॉलेज के बीए इतिहास विभाग अंतिम वर्ष की छात्राओं ने शनिवार को राज्य संग्रहालय में शैक्षिक भ्रमण किया। छात्राओं ने अवध की ऐतिहासिक मूर्तियों, सिक्के और पुरावशेष के बारे में जाना और समझा। छात्राओं ने इजिप्टियन गैलरी, टेराकोटा गैलरी तथा पुरातात्त्विक गैलरी का अवलोकन किया। (संवाद)

AMAR UJALA PAGE NO 8

भारतीय संस्कृति इस्लामिक व ईसाई संस्कृति का मिश्रण

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की ओर से शनिवार को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का विषय 'दक्षिण एशिया में भाषा, संस्कृति और क्षेत्र की अंतर्संबंधता' रहा। मुख्य अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. केएल शर्मा ने कहा कि संस्कृति कुछ और नहीं विचारधारा ही है। संस्कृति सामाजिक वास्तविकता की अभिव्यक्ति है। यह मानव समाज को समझने का सबसे महत्वपूर्ण आयाम है। संस्कृति विश्लेषण में इसके स्वरूप का ध्यान रखना चाहिए। मुख्य वक्ता जेएनयू की प्रो. पाणिनी ने कहा कि भारतीय संस्कृति इस्लामिक व ईसाई संस्कृति का मिश्रण है। (संवाद)

LOK SATYA PAGE NO 7

यूपी ट्रेड शो में सजावटी सामान की धूम

लखनऊ, लोकसत्य। लखनऊ विश्वविद्यालय में सजे यूपी ट्रेड शो स्वदेशी मेले के दूसरे दिन शुक्रवार को सजावटी सामान की खूब बिक्री रही। इसके अलावा कैंडल और खानपान में सोन पापड़ी और नमकीन स्टॉल पर अच्छी भीड़ रही।

अटायर ब्रांड के कपड़े के स्टॉल और सॉफ्ट टॉयज के स्टॉल से लोगों ने अच्छी खरीदारी की। उपायुक्त उद्योग मनोज चौरसिया ने बताया कि धीरे-धीरे सकारात्मक रुझान मिलते जा रहे हैं। क्योंकि यह जगह शहरवासियों के लिए काफी मुफीद है। पुस्तक मेला लगने से लोगों को जानकारी है, इसलिए अच्छा फुटफाल आ रहा है।

HINDUSTAN TIMES PAGE NO 6

LU: Tagore Library's ancient manuscripts to be digitised

HT Correspondent
letters@htlive.com

LUCKNOW: From Puranas and other Hindu religious scriptures written on tree barks to a 23.5-foot-long Quran Majeed scroll, the vast collection of rare manuscripts, books, and paintings preserved at Tagore Library is set to get a new digital life.

As part of a nationwide initiative, the National Museum, New Delhi, has begun the process of digitising manuscripts from Tagore Library, said professor Keya Pandey, the honorary librarian. "Over 2,023 manuscripts, 356 rare textbooks, and 400 paintings will be digitised under the collaboration," she said.

Pandey noted that some of these manuscripts are written on tree barks, gold-plated pages, and materials dating back to 118 AD. "The digitisation of these manuscripts and rare textbooks will make them more accessible for readers while ensuring their long-term preservation," she added. Among the prominent ones are Kashf-al-Naqab (118 AD), Delectus (125 AD), Puranas - Una Sanhita, and Garuda Purana written on tree barks. The paintings of prominent artistes, including Asit Kumar Haldar, will be digitised as part of the process. "While the university has applied for the project for quite some time. We were told that the work will begin in the month of October. We also have a backup budget allocated in case there are any changes in the process," said Pandey.

In another step towards modernisation, the Tagore Library has made its circulation counters cashless. "Students can now pay library card fees, late fees, and no-dues charges through QR codes, eliminating the need for cash transactions. This initiative will make the system more user-friendly and efficient."

AMRIT VICHAR PAGE NO 8

पोस्टर का विमोचन करते शिक्षक व छात्र। अमृत विचार

विधि विभाग में पोस्टर विमोचन

अमृत विचार, लखनऊ: लविवि के विधि संकाय में 15 नवंबर को होने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी 'नव अधिनियमित आपराधिक विधियों का विश्लेषण एवं समीक्षा' का पोस्टर विमोचन संकायाध्यक्ष प्रो. आर. के. वर्मा ने किया। इस अवसर पर संयोजक प्रो. आर. के. सिंह, उप संयोजक प्रो. आनंद कुमार विश्वकर्मा, आयोजन सचिव प्रो. अनुराग कुमार श्रीवास्तव, उप आयोजन सचिव डॉ. उत्कर्ष वर्मा और प्रशांत कुमार चौहान मौजूद रहे।

राष्ट्रीय स्तर संगोष्ठी के पोस्टर का विमोचन

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वितीय परिसर स्थित विधि संकाय में 15 नवंबर को राष्ट्रीय संगोष्ठी का पोस्टर विमोचन किया गया। नव अधिनियमित आपराधिक विधियों का विश्लेषण एवं समीक्षा संगोष्ठी पोस्टर का विमोचन संकायाध्यक्ष प्रो. आरके वर्मा ने किया। कार्यक्रम संयोजक प्रो. आरके सिंह ने कहा कि आयोजन शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों को शैक्षणिक संवाद का मौका देगा।

संस्कृति कुछ और नहीं विचारधारा ही है: शर्मा

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में डॉ. राम मनोहर लोहिया शोधपीठ और समाजशास्त्र विभाग की ओर से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हो गया। दक्षिण एशिया में भाषा, संस्कृति और क्षेत्र की अंतर्संबंधता पर आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता राजस्थान विवि के पूर्व कुलपति प्रो. केएल शर्मा ने कहा कि संस्कृति कुछ और नहीं विचारधारा ही है।

I NEXT PAGE NO 4

...अब अरारोट नहीं करेगा नुकसान!

एलयू के बॉटनी डिपार्टमेंट ने कार्न स्टार्च को रेसिस्टेंस स्टार्च में बदलने की निकाली 4 विधियां

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW(11 Oct): स्टार्च का यूज आज कल सबसे ज्यादा फास्टफूड में किया जाता है. डॉक्टर्स के मुताबिक स्टार्च की ज्यादा मात्रा बॉडी के लिए ठीक नहीं होती है. इससे कई तरह की प्रॉब्लम्स हो सकती हैं. स्टार्च ज्यादातर फूड वेस्ट से निकलता है. जिसको कुछ खास विधियों की मदद से रेजिस्टेंट स्टार्च में बदलकर हेल्थ के लिए भी हेल्पफुल बनाया जा सकता है. ये विधि खोज निकाली है लखनऊ यूनिवर्सिटी के बॉटनी डिपार्टमेंट के प्रोफेसर डॉ. प्रदीप कुमार और उनकी रिसर्च टीम ने. वेस्ट मैटेरियल से बने स्टार्च को रेजिस्टेंस स्टार्च में बदलने की इस रिसर्च को इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी में पब्लिश किया गया है.

इन टेक्नीक्स का किया यूज

रेसिस्टेंस स्टार्च के बारे में बात करते हुए प्रो. प्रदीप कुमार ने बताया कि रेसिस्टेंस स्टार्च एक अपाच्य कार्बोहाइड्रेट है. यह गट हेल्थ को बेहतर करके ब्लड शुगर को कंट्रोल करता है. इस रिसर्च में बताया गया है कि कैसे आलू के छिलके, चावल की भूसी, केले के छिलके और शाहबलूत के स्टार्च का यूज कर रेसिस्टेंस स्टार्च तैयार किया जा सकता है. इसे तैयार करने में एंजाइमेटिक हाइड्रोलिसिस, अल्ट्रासाउंड-असिस्टेड एक्सट्रैक्शन और थर्मल प्रोसेसिंग जैसी ग्रीन टेक्नोलॉजी का यूज किया जा सकता है. इसके साथ ही बॉटनी डिपार्टमेंट में उन प्रोसेस पर काम किया जा रहा है, जिसके जरिए फूड वेस्ट को कम करके, उसका बेहतर यूज किया जा सके.

TOI PAGE NO 3

'Language, culture pillars of social unity'

Lucknow: Language and culture are vital pillars of regional identity and social unity. Language acts as the primary vehicle for transmitting cultural traditions, values and worldviews while cultural practices reinforce shared social bonds and a sense of belonging within a community.

This was shared by social scientists during a conference on Intersectionality of Language, Culture and Region in South Asia at Lucknow University on Saturday. The three-day conference is being attended by over 350 scholars, researchers and academics from across India and South Asia.

Director and Dr Ram Manohar Lohia Chair Professor and head of LU sociology department underscored the significance of intersectionality in an era marked by rapid globalisation and digital transformation, asserting that language and culture remain vital pillars of regional identity and social unity. TNN

AMRIT VICHAR PAGE NO 8

विचारधारा ही है संस्कृति: प्रो. शर्मा

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मंच पर उपस्थित वक्ता। अमृत विचार

- लविवि के समाज शास्त्र विभाग में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू
- दक्षिण एशियाई देशों के बीच घटते अंतर्संबंधों पर विशेषज्ञों की चिंता

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के राम मनोहर लोहिया शोध पीठ में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की शुरुआत हुई। विषय था—'दक्षिण एशिया में भाषा, संस्कृति और क्षेत्र की अंतर्संबंधता'। उद्घाटन समारोह में कुलपति प्रो. मनुका खन्ना, मुख्य अतिथि प्रो. के. एल. शर्मा (पूर्व कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय), प्रो. पाणिनी (जेएनयू, दिल्ली) और प्रो. अरविन्द मोहन (डीन, कला संकाय) उपस्थित रहे।

प्रो. के. एल. शर्मा ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि संस्कृति विचारधारा की अभिव्यक्ति है। यह सामाजिक वास्तविकता को समझने का सबसे प्रमुख आयाम है। उन्होंने कहा कि बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में दक्षिण एशियाई देशों के बीच सांस्कृतिक अंतर्संबंध बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य वक्ता प्रो. अरविन्द मोहन ने कहा कि भारत के आर्थिक विकास में विभिन्न कारकों का योगदान रहा है, जिसमें जनांकिकी लाभांश लगभग 95 प्रतिशत तक सहायक रहा। उन्होंने कहा कि बढ़ती औसत आयु के साथ इस लाभ को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है।

सम्मेलन में तीन सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में प्रो. जे. एस. पांडेय, प्रो. एस. एम. पटनायक, प्रो. परमजीत सिंह जज, प्रो. उद्दव प्याकुरेल और डॉ. रवि कुमार ने विचार रखे। द्वितीय सत्र में प्रो. डेविड गेलनर (ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय) ने नेपाल के उदाहरण से दक्षिण एशिया में उभरती नई सांस्कृतिक कल्पनाओं पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र में प्रो. निलिका मेहरोत्रा (जेएनयू), डॉ. सुधेषणा मुखर्जी और डॉ. रेचेल फिलिप ने दक्षिण एशियाई देशों की सामाजिक गतिशीलता पर अपने विचार रखे।